# स्वामी रामानंद तीर्थ मराठवाडा विश्वविद्यालय, नांदेड

के मानव्य विद्या संकाय अंतर्गत विद्यावाचस्पति (पीएच.डी.) उपाधि
हेतु प्रस्तुत शोध-प्रबंध का प्रारूप

# "मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याएँ"

**शोध-छात्र**
**श्री. बिरादार पांडुरंग उत्तमराव**
एम.ए., बी.एड्., सेट.

**शोध निर्देशक**
**प्रा. डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे**
एम.ए., बी.एड., एम. फिल., नेट., सेट., पीएच.डी.
अध्यक्ष, हिन्दी विभाग
शिवजागृती वरिष्ठ महाविद्यालय,
नलेगाँव ता. चाकूर जि. लातूर

**अप्रैल 2019**

## "मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याएँ"

**प्रस्तावना :-**

भारत के प्राचीन, मध्य और आधुनिक काल के साहित्य पर नजर डाले तो हमें पता चलेगा कि हर काल का साहित्य उस देशकाल के समाज का दर्पण रहा है। विदेशी यात्रियों फाह्यान, मेगस्थनिज ने भारत यात्रा करते समय जो कुछ अपने संस्मरण लिखे उससे उस समय की देश की सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक स्थिति का पता आज आसानी से चल जाता है।

कहा जाता है कि समाज और साहित्य में आत्मा और शरीर जैसा संबंध होता है। समाज और साहित्य एक-दूसरे के पूरक हैं। किसी भी देशकाल में जैसा समाज होता है, वैसाही साहित्य रचा जाता है। समाज को शोषण, अराजकता, अन्याय से बचाने तथा लोगों में जनचेतना जगाने के साथ-साथ राजसत्ता चलाने में भी साहित्य की महत्वपूर्ण भूमिका रही हैं।

अगर हिंदी साहित्य की बात की जाए तो हिंदी ने भी अलग-अलग विधाओं; जैसे - कविता, नाटक, उपन्यास, कहानी आदि के माध्यम से उस युग की वास्तविक स्थिति को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है। अन्य विधाओं की तुलना में हिंदी कहानी जिंदगी से अधिक जुड़ी नजर आ रही है। छोटी-छोटी कहानियों के माध्यम से कहानीकारों ने युग की समस्याओं को समाज के सामने रखने का प्रयास किया है।

**विषय चयन :**

कहानी सुनने और सुनाने की भारत में लंबी परंपरा रही है। हर राज्य और उसके विभिन्न हिस्सों में अनेक लोक-कथाओं और कहानियों को सुनाने के कई तरीके

प्रचलन में रहे हैं। जैसे- लोरी, कावड़ विधा, कठपुतली और कहानी को लय में गाकर सुनाने वाले तरीके। कहा जाता है कि, कहानी बच्चों को आनंदित करती है। कहानी के माध्यम से बच्चें सब्र से सुनना, अनुमान लगाना, कहानी के पात्रों व घटना क्रम को याद करना तो सीखते ही हैं साथ ही साथ इससे उनकी एकाग्रता व स्मरण शक्ति का प्रशिक्षण भी होता है।

कहानियाँ ज्ञान, मनोरंजन और शिक्षा का साधन होती हैं। कहानियाँ पढ़ना और सुनना हर एक को अच्छा लगता है। बचपन में मैं भी मेरे दादा-दादी द्वारा रामायण, महाभारत की कहानियाँ बड़े चाव से सुना करता था। माना जाता है कि, एक बार बच्चों को कहानी के माध्यम से किताबों से दोस्ती और जुड़ने का अवसर मिल जाय तो, वे उसीमें रच-बस जाना चाहते हैं और यह बात मेरे ऊपर बिलकुल सही उतरी। क्योंकि जब मैं पाठशाला में पढ़ने के लिए जाने लगा तो, किताबों को पढ़ने में मेरी रूचि बढ़ने लगी। खास करके कहानी की अगर कोई किताब हाथ लग जाए, तो उसे पूरा पढ़े बिना छोड़ने का मन नहीं करता था और इस प्रकार मैंने शुरुआत में पंचतंत्र की कहानियाँ, ईदगाह, चोर कौन?, कुदरत का इंसाफ आदि जैसी कहानियाँ पढ़ ली।

धीरे-धीरे कहानियों के प्रति मेरा आकर्षण बढ़ने लगा। 'जहाँ चाह वहाँ राह' इस पंक्ति के अनुसार मैंने सेकंडरी स्कूल में समय निकालकार प्रेमचंद, प्रसाद, निराला की कुछ कहानियों को पढ़ लिया। फिर स्नातक में पढ़ते समय मेरा संबंध शिवप्रसाद सिंह की 'दादी माँ' नामक कहानी से आया। साथ ही यशपाल, जैनेन्द्र, फणीश्वनाथ 'रेणु' आदि जो ग्रामीण आँचल से जुड़े कहानीकारों को भी मैंनें पढ़ लिया, जिनकी कहानियाँ मुझे अपनी ओर आकर्षित कर रही थीं। जिसका बचपन गाँव के गलीयारे में बीता हो फिर वह गाँव की कहानियों को पढ़े बीना कैसे रह सकता है? इसलिए इन कहानियों को पढ़ने से मैं भी बच नहीं पाया।

आगे चलकर मैं जब स्नातकोत्तर की पढ़ाई करने लगा, तो मिथिलेश्वर द्वारा लिखित 'बारीश की रात', 'हथियारों की वापसी' और 'हरिहर काका' जैसी कहानियों को पढ़ने का मौका मिला जिनकी कहानियों ने एक अपनी अलग छाप मेरे ऊपर छोड़ी। इन कहानियों में व्यक्त पूँजिवाद, अंधविश्वास, अंतर्द्वंद्व, स्वार्थ-लोलूप्ता जैसी सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक, धार्मिक एवं सांस्कृतिक आदि युगीन समस्याओं ने मुझे सोचने के लिए मजबूर किया। कोई भी पाठक अथवा शोधकर्ता साहित्यकार की कोई कृति पढ़ने के पश्चात उस साहित्यकार की अधिक जानकारी प्राप्त करने की कोशिश करता है। मिथिलेश्वर का साहित्य पढ़ने के पश्चात मेरे मन में जिज्ञासा उत्पन्न हुई; क्यों न इसी विषय पर अनुसंधान का कार्य किया जाए? अर्थात मैं एक हिंदी साहित्य प्रेमी होने के कारण मिथिलेश्वर कहानियों की ओर अपने आप संमोहित हो रहा था।

इस विषय को लेकर जब मैं आदरणीय गुरुवर्य डॉ.बालाजी भुरे सर के साथ मिथिलेश्वर की कहानियों पर शोध कार्य करने पर विचार-विमर्श किया तो उन्होंने आपसी चर्चा के बाद **"मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याएँ"** यह शीर्षक निश्चित किया। प्रस्तुत विषय में मेरी जिज्ञासा देखकर मेरे मार्गदर्शक गुरुवर्य ने इस शीर्षक से शोध कार्य करने की अनुमति देते हुए अपने आशीर्वाद के साथ भावी कार्य के लिए मुझे प्रोत्साहित किया।

**उद्देश्य:-**

मनुष्य के प्रत्येक कार्य के पीछे कोई न कोई उद्देश्य रहता ही है। बीना उद्देश का कोई भी कार्य सफल नही होता। अत: "मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याएँ" इस शोध विषय को चूनने के पीछे मेरा उद्देश इस प्रकार रहा है।

- मिथिलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व से परिचित होना।

- कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याओं का यथार्थ चित्रण करना।
- व्यक्त समस्याओं को नवीनतम दृष्टि से सुलझाने का प्रयास करना।
- कृषक जीवन से जुड़ी समस्याओं की खोज करना।
- समाज की विसंगतियों का अध्ययन करना।
- सामान्य लागों में जागृती लाना।
- नई दिशा एवं मूल्यों की खोज करना।

**महत्त्व:-**

मैंने जो शोधकार्य करने का निर्णय लिया है उस शोधकार्य का महत्त्व इस प्रकार हैं :-

- मिथिलेश्वर के व्यक्तित्व एवं कृतित्व के विविध पहलुओं का पता चलेगा।
- युगीन समस्याओं को नए-नए तरीके से सुलझाने में सहायता होगी।
- गाँव और शहरों के विकास के लिए यह शोधकार्य एक नई उपलब्ध साबित होगा।
- मानवतावादी मूल्यों को स्थापित करने में सहायता होगी।
- यह शोधप्रबंध समाज में जागरुकता लाने में लाभदायी होगा।
- यह शोधकार्य हिंदी के छात्र, अध्यापक, शोधछात्र तथा पाठक के लिए उपयोगी साबित होगा।

**शोध प्रविधि :-**

इस शोधकार्य में वर्णनात्मक, विश्लेषणात्मक तथा समीक्षात्मक शोधप्रविधियों को अपनाया जाएगा।

# मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त युगीन समस्याएँ

## अनुक्रमणिका


प्रथम अध्याय :- मिथिलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

द्वितीय अध्याय :- हिंदी कहानी साहित्य में मिथिलेश्वर का स्थान

तृतीय अध्याय :- मिथिलेश्वर की कहानियों में सामाजिक समस्याएँ

चतुर्थ अध्याय :- मिथिलेश्वर की कहानियों में आर्थिक समस्याएँ

पंचम अध्याय :- मिथिलेश्वर की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ

षष्ठ अध्याय :- मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ

सप्तम् अध्याय :- उपसंहार

## प्रथम अध्याय

## मिथिलेश्वर का व्यक्तित्व एवं कृतित्व

हिंदी कहानी विधा के इतिहास में मुख्यत: साठोत्तरी काल के ग्रामीण जीवन से जुड़े कहानीकारों में मिथिलेश्वर की महत्त्वपूर्ण भूमिका रही हैं। इनका जन्म 31 दिसंबर 1950 ई. में बिहार के भोजपुर जिले के बैसाड़ीह गाँव के एक कायस्थ परिवार में हुआ। कहा जाता है कि, मिथिलेश्वर के पिता ( प्रो. वंशोरोपन लाल) भी विलक्षण प्रतिभा के धनी थे; परंतु उनकी असाध्य बीमारी ने मिथिलेश्वर के जीवन के आरंभ से ही कठिन संघर्ष के बीज बो दिए थे। जिसकी वजह से उन्होंने अपने जीवन में कभी हार नहीं मानी। भाईयों की शिक्षा-दीक्षा, बहनों की शादी, स्वयं के शादी की विवशता, फिर कई पुत्रियों का पिता हो जाना उनके संघर्ष जीवन को और कठिन बनाने में योगदान ही देता रहा। मिथिलेश्वर के व्यक्तित्व निर्धारण में उनकी अनवरत संघर्षपूर्ण जीवनयात्रा की अहम भूमिका है। वे अपने लेखक होने का काफी श्रेय अपनी माँ को देते हैं। कहानी के साथ-साथ उपन्यास विधा को भी उन्होंने गंभीरता से अपनाया है। मिथिलेश्वर का विषय क्षेत्र मुख्यत: ग्रामीण जीवन है। प्रेमचंद और रेणु के बाद गाँव से संबंधित कथा लेखन में मिथिलेश्वर का नाम सबसे पहले है। इनके 'झुनिया' (1980), 'युध्दस्थल' (1981), 'प्रेम न बाड़ी ऊपजै' (1995), 'यह अंत नहीं' (2000), 'सुरंग में सुबह', 'एक थी मुनिला' आदि उपन्यास, तो 'बाबूजी' (1976), 'बन्द रास्तों के बीच' (1978), 'दूसरा महाभारत' (1979), 'मेघना का निर्णय' (1980), 'तिरिया जनम' (1982), 'हरिहर काका' (1983), 'एक में अनेक' (1987) 'एक थे प्रो. बी. लाल' (1993), 'भोर होने से पहले' (1994): (भोर होने से पहले, वैतरणी भौजी, अध्यापन, आनन्द मोहन वर्मा बेहोश हैं, रास्ते, कीर्तनिया बाबा, सो दुविधा पारस नहिं जानत, तीन यान, एक और मृत्यूंजय, डॉ.सेन का सपना, गंगिया फुआ,

सिंबोंगा की वापसी, नये दम्पती, एक गाँव की अन्तःकथा, एक रात एकाएक।) 'चल खुसरो घर आपने' (2000), 'जमुनी' (2001), आदि कहानी-संग्रह है। साथ ही साथ आपने बालोपयोगी साहित्य और निबंध पर भी लेखनी चलाई है। अतः इस अध्याय में मिथिलेश्वर का जन्म, जन्मस्थान, माता-पिता, परिवार, बचपन, शिक्षा-दीक्षा, वैवाहिक जीवन, व्यक्तित्व-कृतित्व आदि विविध बिंदुओंपर विस्तार से विवेचणात्मक विश्लेषण किया जाएगा।

## द्वितीय अध्याय

## हिंदी कहानी साहित्य में मिथिलेश्वर का स्थान

इस संसार में किसी भी वस्तु का जहाँ उद्‌भव होता है, वहाँ विकास और अंत भी होता है। यह क्रम हर वस्तु के लिए लागु है। यहाँ हिंदी साहित्य की अगर बात करें, उस में खास करके कहानी विधा की बात करें, तो कहानी विधा का भी अपना एक स्वतंत्र विकास है। तो सबसे पहले आरंभ से लेकर आज तक जो कहानी ने अपनी यात्रा तय की है तो उस समग्र यात्रा को प्रेमचंद के नाम से विभाजित किया जाता है।

**प्रेमचंद पूर्व** कहानी अनुकरण को लेकर चल रही थीं जिसका उद्देश केवल मनोरंजन था। उसमें कल्पनाओं की अधिकता थी। उसमें चमत्कार का गुण था; लेकिन **प्रेमचंद युग** में आकर प्रेमचंद जी ने कल्पना के आकाश में विहार करनेवाली कहानी को जमीन पर उतार दिया। अर्थात कहानी का संबंध मनुष्य जीवन के साथ जोड़ दिया। प्रेमचंद जी के तर्ज पर लिखनेवाले बहुत सारे कहानीकार इस कहानी के विकास को आगे बढ़ाते गए; जैसे उसमें जयशंकर प्रसाद का भी नाम आता है। लेकिन **प्रेमचंदोत्तर काल** में कहानी का सही मायने में विकास हुआ। कहानी में यथार्थवादी गुण आ गया और कहनीकार अपनी कहानियों में समाज में विविध समस्याओं की चाहे वह सामाजिक, आर्थिक, राजनीतिक या

धार्मिक हो अभिव्यक्ति करने लगा। ऐसे समय **साठोत्तरी काल में** मिथिलेश्वर का भी कहानी के विकास में महत्त्वपूर्ण योगदान रहा है; क्योंकि उनकी कहानियों में यथार्थता को लेकर विविध समस्याओं की अभिव्यक्ति हुई है। साठोत्तरी से समकालीन कहानीकारों में ज्ञानरंजन, काशीनाथ सिंह, दूधनाथसिंह, स्वयंप्रकाश, संजीव, उदयप्रकाश आदि कहानीकारों में मिथिलेश्वर का स्थान कैसा रहा इसका इस अध्याय में जायजा लिया जाएगा।

## तृतीय अध्याय

## मिथिलेश्वर की कहानियों में सामाजिक समस्याएँ

मनुष्य एक सामाजिक प्राणी है। वह समाज में रहकर ही अपना विकास कर सकता है। ऐसे समय उसे अलग-अलग प्रकार की समस्याओं का सामना करना पड़ता हैं। यहाँ इन कहानियों में ग्रामीण परिवेश को लेकर खास करके गरीबी, छुआछुत, नारी शोषण, विधवा विवाह, ग्रामीण जीवन की त्रासदी, परंपरा, पारिवारिक समस्या, अशिक्षा आदि जैसी विविध सामाजिक समस्याओं का लोगों को किस प्रकार से सामना करना पड़ता है उस पर विस्तार से इस अध्याय में विवेचन किया जाएगा।

## चतुर्थ अध्याय

## मिथिलेश्वर की कहानियों में आर्थिक समस्याएँ

अर्थ मनुष्य के जीवन का केंद्र है; क्योंकि मनुष्य के जीवन की समस्त गतिविधियाँ अर्थ के इर्द-गिर्द घूमती हैं। उसके बीना कोई भी अपना कार्य पूरा नहीं करता। यहाँ कहा जा सकता है कि आर्थिक संपन्नता मनुष्य को सुखी भी बना सकती है और आर्थिक विपन्नता मनुष्य को दुःखी भी बना देती है। अतः इस अध्याय के अंतर्गत अर्थ से जुड़ी बेरोजगारी, दहेज़ प्रथा, भूख, महँगाई, अकाल, आदि जैसी विविध समस्याओं का जायजा लिया जाएगा।

## पंचम् अध्याय

## मिथिलेश्वर की कहानियों में राजनीतिक समस्याएँ

आज वर्तमान समय में राजनीति के बारे में जितना बोला जाए उतना कम है। आज हर व्यक्ति को राजनीति अपनी ओर प्रभावित करती नजर आ रही है। एक समय ऐसा था कि गाँव राजनीति से अलग था, लेकिन आज यह राजनीति शहर से गाँव तक पहुँच गई है। यहाँ तक कि गाँव के घर-घर में घुस गई है। इस अध्याय में राजनेताओं का वैयक्तिक स्वार्थ, सामंती व्यवस्था, मजदुरों की पीड़ा, नेता, अधिकारी द्वारा किया जानेवाला भ्रष्टाचार, सरकारी राजनीति आदि विविध बिंदुओ पर विस्तार से विवेचन किया जाएगा।

## पष्ठ अध्याय

## मिथिलेश्वर की कहानियों में धार्मिक एवं सांस्कृतिक समस्याएँ

भारत एक ऐसा देश है जहाँ विविध धर्म के लोग एक साथ अपना जीवन व्यतीत करते नजर आते हैं। प्रत्येक धर्म का व्यक्ति अपने-अपने धर्म के अनुसार अपनी रहन-सहन, आचार-विचार को व्यक्त करता है। उनकी संस्कृति अपनी एक विशेष संस्कृति होती है। गाँवों में भी अलग-अलग त्योहारों को अपने-अपने धर्म के अनुसार अलग-अलग ढंग से मनाया जाता है। इस अध्याय में मिथिलेश्वर की कहानियों में व्यक्त अंधविश्वास, मठाधिशों का स्वार्थ, खान-पान, आचार-विचार, रहन-सहन, तीज-त्योहार आदि विविध बिंदुओं का विस्तार से विश्लेषण किया जाएगा।

## सप्तम अध्याय

## उपसंहार

इस अध्याय में समस्त शोधकार्य का सार रुप में निचोड़ प्रस्तुत किया जाएगा।

**संदर्भग्रंथ सूची**

- **कहानी संग्रह**


1. बाबूजी - मिथिलेश्वर
2. बंद रास्तों के बीच - मिथिलेश्वर
3. दूसरा महाभारत - मिथिलेश्वर
4. मेघना का निर्णय - मिथिलेश्वर
5. गाँव के लोक - मिथिलेश्वर
6. तिरिया जनम - मिथिलेश्वर
7. जमुनी - मिथिलेश्वर
8. हरिहर काका - मिथिलेश्वर
9. एक में अनेक - मिथिलेश्वर
10. एक थे प्रो.बी.लाल - मिथिलेश्वर
11. भोर होने से पहले - मिथिलेश्वर
12. चल खुसरो घर अपने - मिथिलेश्वर



**शोधार्थी**

**श्री. बिरादार पांडुरंग उत्तमराव**
एम.ए., बी.एड्., सेट

**शोध निर्देशक**

**प्रा. डॉ. बालाजी श्रीपती भुरे**
एम.ए., बी.एड., एम. फिल., नेट,सेट, पीएच.डी.
हिंदी विभाग अध्यक्ष
शिवजागृती वरिष्ठ कला महाविद्यालय,
नलेगाँव ता. चाकूर जि. लातूर